ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II | ISSUE- VII | JULY | 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

बंजारों की परंपरागत भजन पद्धति

डॉ. गुलाब राठोड
हिन्दी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय,
धारवाड – 03

भारत एक प्राचीन तथा विशाल देश है । इस विशाल देश में अनेक जाति–उपजातियों के लोग बसते हैं । तथा इस बुद्धिजीवि प्राणि मात्राओं में बंजारा जाति अपने आप में एक अलग जाति है । यह जाति अपनी रंग–बिरंगी वेश–भूषा से प्रत्येक आदमी को आकर्षित करती है । और यह जाति अपने परंपरागत रीति–रिवाजों, संस्कारों तथा लोक–कलाओं आदि में अलगत्व रखती हैं । इस जागतीकरण के दौर में भी बंजारा जाति आज भी अपने परंपरागत रीति–रिवाजों, संस्कारों, खान–पान, वेश–भूषा तथा बोली को सुरक्षित बनायी रखी हुई है । यह जाति गाँव तथा शहर से दूर जंगल की गोद में बसी हुई है । तथा यह एक परिश्रमी जाति है । इस परिश्रमी जाति का कला से गहरा संबंध है । आज भी जब ये लोग नित्य कामों से ऊब जाते हैं तब थकान मिटाने के लिए या अपने गमों को भुलाने के इए संगीत का सहारा लेते हैं । संगीत से तरोताजा होकर फिर वे नये से अपने कामों में जुड जाते हैं । प्रत्येक समुदाय की अपनी परंपरागत वाद्य सामग्रियों की तरह बंजारा लोगों की भी अपनी परंपरागत वाद्य सामग्रियाँ हैं । जिसके द्वारा इनकी भजन गाने की अपनी ही अलग पद्धति दिखायी देती है ।

ये लोग धर्म–पिपासु हैं तथा इनमें धार्मिक संस्कार, त्योहार बडे ही धूम–धाम से हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं । सामान्यतः बंजारा लोग सीमित साधनों के साथ असीमित आनंद मनाते हैं । इनमें विशेष अवसर पर इनके धर्मगुरु संत सेवाभाया, कुलदेवी मरियम्मा, तुलजा भवानी, सति माता आदि देवी–देवताओं के तथा प्रांतीय प्रभाव से राम, कृष्ण, हनुमान, शंकर आदि के भजन बडे ही चाव से गाये जाते हैं । इनके अलावा इनमें अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भजन गाने की प्रथा प्रचलित है । बंजारा जाति के विविध कलाओं में से भजन एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कला मानी जाती है । प्रायः बंजारा जाति में गाने–बजने में

सिर्फ पुरुष लोग भाग लेते हैं । इसलिए उसकी एक विशेषता बनी हुई है । सामान्यतः बंजारों की परंपरागत भजन पद्धति में गाते समय कांस की थाली, नगाड़ा, तबला, झांझ आदि वाद्य सामग्रियों का प्रयोग किया जाता है । भजन गाते समय कहीं–कहीं नगाडे के बदले तबला का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है । भजन गाने बजानेवाली टोलियों को बंजारा बोली में 'गावण्या' या 'म्याळ' कहते हैं । इनकी गानेवालों की टोली में कम से कम 4 या 5 लोग होते हैं । सभी गाने बजाने में स्फूर्ति से भाग लेते हैं । सभी के हाथ में एक–एक वाद्य सामग्रियाँ होती हैं । झांझ की ताल के साथ एक आदमी खड़ा होकर गाता है, बाकी सभी लोग दुहराते हैं । एक आदमी तबला बजाता है और एक आदमी थाली । इस प्रकार जब ये लोग गाते हैं तो सुनकर मन मुग्ध हो जाता है । इनमें कभी–कभी गानेवाला बैठकर भी गाता है । गानेवाले को छोड़कर अन्य सभी लोग गोलाकार बैठे हुए रहते हैं । तबले को छोड़कर बाकी सभी सामग्रियाँ बजाने के लिए बहुत आसान होती है । कोई ताल क्लिष्ट नहीं होती । गीत के साथ–साथ ताल भी बदल जाती है । कभी–कभी ये लोग सारी रात गाते बजाते रहते हैं । कभी–कभी गानेवालों की मंडलियों में होड सी लग जाती है । खाने–पीने और नींद की परवाह किये बगैर लगातार गाते बजाते रहते हैं ।

बंजारा समुदाय में गानेवालों की टोलियों की एक विशेषता यह है कि जब भी गानेवाला गाने के लिए आगाज करता है तब वह अपने धर्मगुरु संत सेवाभाया को प्रणाम करके ही गाने को आगाज करता है । गानेवाला धर्मगुरु संत सेवाभाया से प्रार्थना करता है कि – "ये सेवाभाया हम सब मिलकर हाथ जोड़कर तुझे प्रणाम करते हैं कि तुम ही इस संसार के निर्माता हो, हर एक के घट–घट में विराजमान हो, और आप निर्गुण, निराकार हो, इसलिए हमारा तुम पर पूरा भरोसा है । इतना ही नहीं तुम एक महान अवतारी पुरुष हो एवं तोलाराम नामक घोड़े पर सवारी करनेवाले दिव्य पुरुष हो । ये सेवाभाया गोर (बंजारा) अपने परिवार के साथ जहाँ भी बसे हैं उन सभी पर तुम्हारी कृपा हमेशा बनी रहने देना । साथ ही साथ गाय–बैलों आदि प्राणियों पर भी आपकी कृपा दृष्टि बनी रहने देना । निश्चित किया हुआ काम समय पर पूरा करना और पापी एवं दुष्टों को हमेशा दूर ही रखना तथा ये सेवाभाया एक सेर अनाज को सव्वा सेर करना । हमारे कार्य में आनेवाली हर समस्याओं को हजारों कोस दूर रखना, पुत्रहीन की गोद भरना एवं निर्धन को धन से भरपूर करना और रोगियों का रोग दूर करना । ये सेवाभाया भूखे को रोटी देना एवं हम जैसे गरीबों को थाना और कचहरी का काला मुँह मत दिखाना । ये सेवाभाया हम भोले–भाले काले बाल के मनुष्य हैं । पग–पग में हम से गलती होती रहती है, इन छोटी–मोटी गलतियों को माफ करना और सेवाभाया तुम्हारे नाम की पूजा को स्वीकार कर लेना । आपसे प्रार्थना करनेवाले सभी पर आपकी कृपा दृष्टि बनी रहने देना ।

कभी–कभी बंजारा लोग इस तरह भी गाते हैं –

तोन हाकमारुचु सेवालाल

आताणि दरसन देद

तार सारु झुर बालगोपाल

पौरा छोडन तु चाल

तारो नाम जगेम मोटो . . . .

गोरुन देक फरनहोटो ॥1॥

रूढिमारन आजोरे सेवालाल

पौराम छतारि पाल

गोरुरो देक जरा हाल

देव बणगोची बापु सेवालाल

तारो नाम जगेम मोटो . . . .

गोरुन देक फरन होटो ॥2॥

सामान्यतः इसी प्रकार बंजारा लोग कुलदेवी मरियम्मा, तुलजा भवानी, सति माता, दुर्गादेवी, जगदंबा, कंकाली, हमुभुक्या तथा अन्य प्रांतीय प्रभाव से श्री गणेश, राम, श्रीकृष्ण, हनुमान, शिवशंकर आदि देवी–देवताओं के भजन गीत अपने परंपरागत वाद्यों के साथ जब गाते हैं तब सुननेवालों का मन मुग्ध हो जाता है । बंजारा लोकगीतों में तथा भजन गीतों में विशेषतः वर्ण और शब्द से ज्यादा लय और आलय को महत्व दिया जाता है । मात्राओं पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता । कभी–कभी कर्ता के लिए कुछ शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है । अबाल स्त्री–पुरुष सभी गीतों को गुनगुनाते हुए रहते हैं मगर बहुत से गीतों का अर्थ खुद ही नहीं समझते । ये गीत एक की जबान से दूसरे की जबान पर आरुढ होते चले जा रहे हैं । आनंद विभोर हो जाने पर या दुःखी हो जाने पर गा उठते हैं । अर्थ समझने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी । और इस ओर विचार करने के लिए उनके पास समय है भी कहाँ ? पेट की आग बुझाने के लिए ही वक्त नहीं मिलता तो ये सब क्यों सोचेंगे वे ? गीतों का सजाना, सँवारना तो दूर ही रहा । उनका यह ध्येय ही नहीं रहता कि उनके गीत सुंदर हो, दूसरे सीखे, प्रचार और प्रसार करें, लिपि–बद्ध करके उन्हें अमर बना दें ।

उन्हें यह डर भी नहीं रहता कि मेरे इन गीतों को लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? और महत्वपूर्ण बात तो यह है कि ये गीत किसी एक व्यक्ति से निर्मित होने पर भी उस व्यक्ति का नाम, पता समय की गर्त में डूब जाता है, उसे न तो कोई पहचानता है, और न तो कोई याद रखता है । अनपढ़ और अशिक्षित लोग गीतों को गाते समय कंठस्थ कर लेते हैं । जब ये लोग गाते हैं तब दूसरे सुनकर जबानी याद कर लेते हैं । इस प्रकार यह सिलसिला चलता रहता है । इस दौरान कभी–कभी गीतों का रूप भी बदल जाता है । कुछ भूल जाते हैं, कुछ अपनी ओर से जोड देते हैं और कुछ अपनी पसंद के अनुसार बदल देते हैं ।

आजकल बंजारा भजन गीतों में उपदेश पर भजन, शिक्षा संबंधी भजन, दहेज प्रथा संबंधी भजन, व्यसन मुक्ति संबंधी भजन, घर–परिवार, भ्रष्टाचार आदि से संबंधित गीत बहुत ही अर्थगर्भित और प्रेरणादायक रूप में मिलते हैं । प्रायः बंजारा स्त्रियों के लिए कांस की थाली, तबला, नगाडा, झांझ की आवश्यकता नहीं लगती । इनके लिए सिर्फ डफली काफी होती है । स्त्रियाँ डफली के ताल पर खुद नाचती हैं और साथ ही साथ गाती भी है । उनके पावों के झंझट, घुंघरु और विशेष प्रकार के आभूषणों से जो मधुर आवाज निकलती है वो किसी आधुनिक वाद्य सामग्रियों से कम नहीं होती ।

अंततः मुझे यह कहना है कि आजकल बंजारा गाँव और नगर जीवन के संपर्क में आ रहा है । नयी संस्कृति का प्रभाव उनके जीवन पर पड रहा है । साथ ही साथ इनकी बोली पर प्रांतीय भाषा का प्रभाव पडता जा रहा है । धीरे–धीरे इनकी आँखें खुल रही है और आश्चर्यान्वित होकर अब संसार को देख रहे हैं । फिर भी इनमें आज भी अपने परंपरागत वाद्य सामग्रियों द्वारा भजन गाने की प्रथा सुरक्षित बनी हुई है ।

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com